EDII

Rajasthan Patrika (Hindi)

July 10, 2019
Page No. 12

एमबीए पढ़ा विद्यार्थी दिन में दिखा रहा 'ब्रह्मांड'

पत्रिका

एक्सक्लूसिव

खुद बनाकर बेच रहा है टेलिस्कोप,

गुजरात इनोवेशन काउंसिल ने दी है आर्थिक मदद, ईडीआईआई का भी ऐलान

कई स्कूल, विश्वविद्यालय बने खरीदार

नगेन्द्र सिंह
rajasthanpatrika.com

अहमदाबाद. भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) से व्यापार प्रबंधन के गुर सीखने वाला विद्यार्थी इन दिनों स्कूल-कॉलेजों के विद्यार्थियों को दिन में 'ब्रह्मांड' के दिखाने में जुटा है। अहमदाबाद निवासी अद्वैत रावल ब्रह्मांड दिखाने के तहत आठों ग्रह, उनके उपग्रह, तीन गैलेक्सी, चार नेबुला को दिखा रहे हैं।

रावल पैराबोलिक रिफ्लेक्टर टेलीस्कॉप बना कर बेचने में जुटे हैं। इसके लिए उन्होंने नो योर स्काई नामक स्टार्टअप शुरू किया है। अद्वैत का दावा है कि भारत में वे इकलौते शख्स हैं जो इस प्रकार के टेलिस्कोप को भारत में ही अपने हाथों से बनाकर बेचने का स्टार्टअप चलाते हैं। वैसे इसे विदेशों से खरीदकर लाना पड़ता है।

अहमदाबाद शहर और राजकोट के कई स्कूल और विश्वविद्यालय रावल के हाथों से बनाए टेलिस्कोप का उपयोग कर रहे हैं।

गुजरात इनोवेशन काउंसिल (जीआईसी) के स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन सोसायटी (एसएसआई) ने अद्वैत को टेलिस्कोप बनाने के स्टार्टअप के लिए करीब दो लाख रुपए की आर्थिक मदद की है।

ईडीआईआई ने भी अद्वैत को भारतीय में टेलीस्कोप को विकसित करने के आर्थिक मदद का ऐलान किया है। इस उपलब्धि के लिए उन्हें ईडीआई ने 2017-19 बैच के एसएसआईपी अवार्ड से नवाजा था।

देखा चंद्रग्रहण तो आया विचार

अद्वैत बताते हैं कि ईडीआईआई से बिजनेस एन्टरप्रेन्योरशिप में एमबीए करते समय चंद्र ग्रहण को देखने के लिए जब टेलिस्कोप को लाया गया, तब इस दौरान उसकी ऊंची कीमत, भारी वजन की जानकारी होने पर इसे बनाने का विचार आया। उन्होंने कहा कि भारत में कोई इसे बनाता नहीं है। चीन में ही ज्यादातर बनकर आते हैं।

पॉकेट टेलिस्कोप जल्द, जन्मदिन पर कर सकेंगे गिफ्ट

अद्वैत बताते हैं कि वे एक पॉकेट टेलिस्कोप भी बना रहे हैं जिसे 150 रुपए में उपलब्ध कराने का विचार है, ताकि लोग स्कूली बच्चों को उनके जन्मदिन पर चॉकलेट भेंट करने की जगह टेलिस्कोप गिफ्ट कर सकें। टेलिस्कोप में 11 तरह के प्रोडक्ट हैं। अगले कुछ महीनों में ही सभी प्रकार के टेलिस्कोप बनाने की योजना है। इसकी कीमत बाजार में मिलने वाले टेलिस्कोप की तुलना में काफी कम होगी।

इन स्कूल-कॉलेजों में हो रहा है उपयोग

वे बताते हैं कि पंडित दीनदयाल पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी (पीडीपीयू), सौराष्ट्र विवि, गुजरात विद्यापीठ, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल), आनंद निकेतन स्कूल, डीपीएस गांधीनगर, पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल-चांदखेड़ा, कड़ी सर्व विश्वविद्यालय, सेंट जेवियर्स स्कूल-गांधीनगर में उनके बनाए टेलीस्कोप का उपयोग किया जा रहा है।

ये हैं फायदे

स्कूलों में सातवीं कक्षा से ही ब्रह्मांड, ग्रह, तारे, सौरमंडल को पढ़ाया जाता है। इस टेलिस्कोप की मदद से विद्यार्थी इन ग्रहों, तारों, सौर मंडल को देखकर उसके बारे में जान सकेंगे। कीमत और वजन काफी कम होने से गुणवत्ता बेहतर होने से स्कूल-कॉलेज इसे खरीद कर अपने बच्चों को दिखा सकते हैं।

बेहतर गुणवत्ता, सुरक्षा भी ज्यादा

नो योर स्काई की ओर से बनाए गए केवाईएस 6.3 टेलिस्कोप को बीते कुछ महीनों से उपयोग किया जा रहा है। इसमें 6.3 इंच का मिरर है। समर वर्कशॉप, टीचर ट्रेनिंग में ये काफी मददरूप है। इसकी गुणवत्ता बेहतरीन है। सुरक्षा भी अधिक है।

-डॉ.प्रसन्न गांधी,
डिपार्टमेंट ऑफ लाइफ लोंग एजूकेशन, गुजरात विद्यापीठ